राष्ट्रीय सुरक्षा जागरण मंच

Forum for Awareness of National Security (FANS)

(Regd. No. S/1723/District South/2014)

101, H.I.G. DDA Flats, Block-1,

Motia Khan, Paharganj Pin Code. 110055.

M: 8178828297, 8375965010 Ph: 011-43524524

Email: fansnationaloffice@gmail.com

प्रस्ताव क्रम संख्या - 3

भारत विश्व एजेंडा को तय करने में अग्रणी भूमिका निभाए

आज विश्व की राजनीति तेजी से बदल रही है। शीत युद्ध के बाद सबसे बड़ा बदलाव है, जिसके केंद्र में एशिया महादेश है जहां पर संघर्ष भारत और चीन के बीच है। भारत आज अपने बूते पर खड़ा है, पूर्व सोवियत संघ का पहले की तरह साथ नहीं है। भारत विरोध की इकाई पड़ोस में ही स्थित है। अमेरिका भारत का सहयोगी बन चुका है। भारत की गिनती महत्वपूर्ण देशों में होने लगी है। भारत के प्रधानमंत्री को दुनिया के सबसे मजबूत व्यक्ति के रूप में पहचान की जा रही है। भारत का योगदर्शन पूरी दुनिया की नियामक बन गई है। आज भारत की आर्थिक और राजनीतिक क्षमता इतनी समृद्ध हो चुकी है कि दुनिया के समक्ष भारतीय संस्कृति को तेजी से अपनाने की कोशिश को बल दिया जा रहा है। जहां से युद्ध और हिंसा को कम किया जा सके। सुपर पावर की जगह **'विश्व गुरु' की धारणा** चल पड़ी है। भारत पहले भी दुनिया में अपनी श्रेष्ठ संस्कृति और ज्ञान का परिचय दे चुका है, आज इस बात की पुनः जरुरत है कि हम अपनी सभ्यता के ज्ञान के साथ दुनिया को एक बेहतर शक्ल देने की पहल कर सकते हैं।

विदेश नीति की चुनौतियों की बात करें तो कई हैं। जिसमें सबसे अहम भारत अमेरिका संबंध में हो रहे निरंतर बदलाव की वजह से जुड़ा हुआ है। यह बदलाव अन्य देशों के संबंध से जुड़ा हुआ है, जिसमें इरान और रूस मुख्य रूप से शामिल है। पिछले दिनों अमेरिका के विदेश मंत्री सोची में रूस के राष्ट्रपति पुतिन से मिले थे। कहा जाता है कि इतिहास अपने आप को दुहराता है, कभी-कभी यह दुहराव विपरीत मुहाने से भी शुरू होता है। 1971 में किसिंजर ने चीन यात्रा की थी, वह यात्रा अमेरिका-चीन संबंध की नयी परिभाषा को जन्म दिया, उसकी

बिसात अमेरिका की रूस विरोध का कारण बनी थी, तक़रीबन 49 वर्षों बाद अमेरिकी विदेश मंत्री माइक पॉम्पेओ की रूस यात्रा अमेरिका-रूस संबंध के बीच की खाई को भरने की कोशिश है। अगर रूस-अमेरिका के बीच एक नए समीकरण का निर्माण होता है तो भारत हर तरह से लाभ में होगा।

रूस ने अपनी नीति में कई बुनियादी परिवर्तन किए हैं जो भारत को नागवार गुजरा, अफ़ग़ानिस्तान की स्थिति इसका सबसे ताजातरीन उदाहरण है। अगर रूस अमेरिका एक श्रेणी में खड़े होते है तो भारत न केवल अपनी बिसात अफ़ग़ानिस्तान में बचाने में सफल होगा बल्कि रूस और चीन के बीच की तल्खी की कमी पाकिस्तान के समीकरण को भी कमजोर करेगा। इस व्यवस्था में भारत की कूटनीतिक कारीगरी भी उत्तम रंग लाएगी। भारत-अमेरिका संबंध की एक नयी चुनौती यह है कि अमेरिका भारत की स्वायत्तता पर निरंतर अंकुश लगा रहा है। भारत डोनाल्ड ट्रम्प की अमेरिका प्रथम नीति को कैसे अपने पक्ष में करता है, यह प्रधानमंत्री के सामने दूसरी पारी की सबसे बड़ी चुनौती है।

1885 में कुम्भ मेले को देख़ने आए मार्क ट्विन, प्रसिद्ध ब्रिटिश कहानीकार ने कहा था कि कुम्भ अद्भुत संगम है लोगो के विश्वास और भारत की एक अलग पहचान का, जिसे सम्भवत ; गोरे चमड़ी के लोग भौतिकवादी नजरिये से नहीं समझ पाएंगे। 2019 का कुम्भ मेला कई मायनों में भारत की अन्तराष्ट्रीय छवि को एक विश्व के रूप में स्थापित करने में सार्थक होगी। 2015 में योग को स्थापित कर भारत का पहला कदम सांस्कृतिक कूटनीति को स्थापित करने में सफल रहा। चीन पिछले कई वर्षों में बौद्ध धर्म से आध्यात्मिक अंश को बाहर निचोड़कर एक ऐसी व्यवस्था को स्थापित करने की कोशिश में है, जहां पर कलह के सिवा और कुछ नहीं है। कारण चीन की 60 फीसदी आबादी नास्तिक है, धर्म में उनका विश्वास नहीं है। शीत युद्ध के दौरान पश्चिमी शक्तियों ने भी मानव समाज के लिए अनेकों मुसीबतें पैदा की। संस्कृति के नाम पर भौतिक शक्तियों का प्रदर्शन होता रहा। जातीय युद्ध और एक दूसरे से अलग की पहचान के

सिद्धांत को बढ़ावा दिया जाता रहा । समाज रंग, भाषा और क्षेत्र के आधार पर बंटा हुआ है । फिर हंटिंग्टन ने धर्म और सभ्यता के आधार पर दुनिया को बांटने की नयी थ्योरी दे डाली । ऐसे बंटे हुए मौहाल में भारत की आध्यात्मिक प्रेरणा ही दुनिया को एक कड़ी में जोड़ सकती है।

प्रस्तावना :

राष्ट्रीय सुरक्षा जागरण मंच विश्व राजनीति के अलोक में भारत की अग्रिम भूमिका की बात को गंभीरता के साथ रखना चाहती है । इसके लिए निम्लिखित कदम उठाये जाने जरूरी हैं :

1. भारत अपनी सांस्कृतिक धरोहर के आधार पर विश्व शांति की नई अवधारणा को स्थापित करे, योग के अतिरिक्त सुपर पॉवर की जगह विश्व गुरु की परम्परा को स्थापित करने के लिए कूटनीतिक प्रयास शुरू करे ।
2. विश्व को लोकतांत्रिक नेतृत्व देने का प्रयास भी भारत के जिम्मे ही है ।
3. 21 वीं सदी विश्व में लोकतंत्र की सदी है, इसमें एशिया व अफ्रीका के कमजोर देशों में अधिनायकवादी तत्वों को फैलने से रोकने का उतरदायित्व भी भारत के कंधे पर है ।
4. हिमालयन देशों से लेकर हिन्द महासगार के तटीय देशो में एक मजबूत आर्थिक और सांस्कृतिक ढांचा तैयार करने का काम भी भारत के लिए वांछित है ।
5. विश्व बंधुत्व की धारणा को व्यापक बनाने के लिए 'रक्षा-बन्धन' उत्सव को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाने का कूटनीतिक प्रयास हो । रक्षा बन्धन उत्सव मानवीय संवेदना व बंधुत्व का एकमात्र उत्सव है।

.....